संपादक का नोट

मैं आप सभी को मेरे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के नाम पर अभिवादन करती हूं। मैं प्रार्थना करती हूं कि हमारे प्रभु यीशु के प्रेम, आनन्द और शांति इस नए साल में आपके और आपके परिवारों के साथ हो।

न्यायियों 16:28 ''तब शिमशोन ने यह कहकर यहोवा की दोहाई दी, कि हे प्रभु यहोवा, मेरी सुधि ले; हे परमेश्वर, अब की बार मुझे बल दे, कि मैं पलिश्तियों से अपनी दोनों आंखों का एक ही पलटा लूं।''

यह एक आँसूभरा प्रार्थना प्रभु के एक सेवक का है, शिमशोन, जिसने अपने जीवन में प्रभु का असली उद्देश्य छोड़ दिया और उससे दूर हो गया। जैसे ही उसने प्रार्थना की, उसका जीवन अंत में पलिश्तियों के साथ समाप्त हो गया। लेकिन शिमशोन को अपने दिल में आशा थी कि प्रभु उसकी प्रार्थना सुनेंगे, भले ही उसकी आंखों को छेद लिया गया और पलिश्तियों के बीच उसके पैर और हाथ जंजीरों में थे। एक तरफ शैतान उसके दिल में डर ला रहा था, दूसरी तरफ उसकी अंतरात्मा उसे चुभन दे रही थी। शिमशोन ने यहोवा को पुकारा यह जानते हुए कि प्रभु ने उसे दिया हुआ सुनहरा अवसर खो दिया था। तब भी, प्रभु के साथ एक होने की और अपनी शक्ति प्राप्त करने के लिए एक बार फिर शिमशोन ने प्रभु से प्रार्थना की।

हमारी आखिरी सांस तक हमें हमेशा प्रभु में आशा रखना चाहिए। इसलिए पुरानी चीजों को याद करते हुए अपने आप को दोष मत दों। विश्वास में प्रभु की ओर देखो और उससे प्रार्थना करो। नीतिवचन 24:6 ''इसलिए जब तू युद्ध करे, तब युक्ति के साथ करना, विजय बहुत से मन्त्रियों के द्वारा प्राप्त होती है।''

दुखी होकर यह मत कहो कि मैं अपनी किस्मत के कारण हारा हुआ हूं; गंदगी से अपने आप को झाड़ो और खड़े हो जाओ। यशायाह 52:2 ''अपने ऊपर से धूल झाड़ दे, हे यरूशलेम, उठ; हे सिय्योन की बन्दी बेटी अपने गले के बन्धन को खोल दे।''

आपको उठाने के लिए, परमेश्वर का हाथ हमेशा से आपके ऊपर पहुंच रहा है, इसलिए प्रभु की कृपा को ध्यान में रखें रहें। रोमियो 5:20 ''जिस के द्वारा विश्वास के कारण उस अनुग्रह तक, जिस में हम बने हैं, हमारी पहुंच भी हुई, और परमेश्वर की महिमा की आशा पर घमण्ड करें।''

राजा सुलैमान कहता है, ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं है जिसने पाप न किया हों या हमेशा कुछ अच्छा किया हो; सभोपदेशक 7:20 ''निःसन्देह पृथ्वी पर कोई ऐसा धर्मी मनुष्य नहीं जो भलाई ही करे और जिस से पाप न हुआ हो।''

दाऊद ने चिल्लाया और कहा भजन संहिता 51:5 ''देख, मैं अधर्म के साथ उत्पन्न हुआ, और पाप के साथ अपनी माता के गर्भ में पड़ा।''

परमेश्वर का वचन हमेशा हमें चेतावनी देता है। अपनी अंतरात्मा को दबाने की कोशिश मत करो यह कहते हुए कि सबने पाप किया है, इसलिए यदि मैं पाप करता हूं तो क्या होगा। इसके बजाय, यहोवा की कृपा और दया में आना चाहिए।

जब आपका पैर फिसल जाता है, तो प्रभु की कृपा आपको बचाने के लिए पर्याप्त है। भजन संहिता 91:12 ''वे तुझ को हाथों हाथ उठा लेंगे, ऐसा न हो कि तेरे पांवों में पत्थर से ठेस लगे।''

आप अपने भीतर आत्मा को बुझने की अनुमति न दें। प्रभु के लिए अपना उत्साह हमेशा जलता हुआ रखें। दाऊद के पास उसी तरह का उत्साह था भजन संहिता 119:139 ''मैं तेरी धुन में भस्म हो रहा हूं, क्योंकि मेरे सताने वाले तेरे वचनों को भूल गए हैं।''

एक क्रिस्ती के जीवन में, उत्साह और प्रभु के लिए विश्वास बहुत महत्वपूर्ण है!

1) प्रभु के लिए उत्साह

2) पवित्र होने के लिए उत्साह

3) प्रचार करने के लिए उत्साह

4) प्रभु के राज्य के लिए उत्साह

इनके माध्यम से हम सभी पिछली चीजों को भूल सकते हैं और प्रभु के साथ आगे बढ़ सकते हैं। प्रभु के साथ चलने के लिए जो कुछ भी करना पड़े करो, ऐसा है कि जो कुछ भी प्रभु तुम्हारे साथ करना चाहे वह करेगा। यहूदा 1:24 ''अब जो तुम्हें ठोकर खाने से बचा सकता है, और अपनी महिमा की भरपूरी के सामने मगन और निर्दोष करके खड़ा कर सकता है।''

प्रभु आपको आशीर्वाद दे और ये वचन आपको आगे बढ़ाएंगे और नए साल में आपका मार्गदर्शन करेंगे।

प्रभु की सेवा में आपकी,

पास्टर सरोजा

परमेश्वर का भय मनो और उसके लिए प्रकाशित हो!

होशे 14:6 ''उसकी जड़ से पौधे फूटकर निकलेंगे; उसकी शोभा जलपाई की सी, और उसकी सुगन्ध लबानोन की सी होगी।'' एक पेड़ को ऊँचा बढ़ने और स्वस्थ होने के लिए उसे अच्छी धूप, उपजाऊ भूमि, मिट्टी और पानी की जरूरत होती है, तभी एक वृक्ष ऊँचा और स्वस्थ होता है। यहां तक कि हमारे जीवन में हमें परमेश्वर की कृपा, दया और वचन की आवश्यकता है ताकि हम धर्मी और अच्छे व्यक्ति बन सकें। हमारे जीवन को सुंदर और एक स्वस्थ वृक्ष की तरह बढ़ने के लिए, हमें सबसे पहले परमेश्वर का भय होना चाहिए। मलाकी 4:2 ''परन्तु तुम्हारे लिए जो मेरे नाम का भय मानते हो, धर्म का सूर्य उदय होगा, और उसकी किरणों के द्वारा तुम चंगे हो जाओगे; और तुम निकल कर पाले हुए बछड़ों की नाईं कूदोगे और फांदोगे।'' जब हम परमेश्वर का भय मानते हैं, तो हमारे जीवन में धार्मिकता का सूर्य उत्पन्न होगा। जहां प्रकाश है, वहां अंधेरा नहीं है। क्योंकि जहां पाप है, वहां अन्धकार है। अँधेरा सभी बुराई की जड़ है, अंधेरे में बुराई के सभी कामों की योजना बनाई जाती है। उदाहरण के लिए, हम देखते हैं की, तो मार्ग पर कई होटल हैं और यह सब अच्छी तरह रौशनी से सजी हुई होती है। होटल के चारों ओर बहुत सी रौशनी होती है, लेकिन हम जानते हैं कि ये बार हैं और वे भीतर से अँधेरा हैं और इन होटल के भीतर बुरे कार्य होते हैं। परन्तु हममें से जो परमेश्वर का भय मानते हैं, धर्म का सूर्य चमक जाएगा और सभी अंधेरे हम से भाग जाएंगे, पाप हम से अलग होगा। इस प्रकार, हमें पता होना चाहिए कि प्रभु हमारी तरफ देख रहे हैं और वह हम पर धर्म के सूरज को प्रकाशित करेगा और हमें जीवन के सभी अंधेरे से अलग कर देगा। हमारा प्रभु हमेशा हमारे साथ है, हमें देख रहे है और हमें सभी पापों से बचाते है।जिन पर धार्मिकता का सूर्य चमकता है, हम अच्छे स्वास्थ्य में होंगे और एक अच्छी तरह से पानी पिलाए हुए स्वस्थ पेड़ के रूप में उगेंगे और हमारा जीवन विजयी जीवन होगा। आइए देखते हैं कि 'परमेश्वर का भय' का क्या अर्थ है, हम पढ़ते हैं नीतिवचन 8:13 ''यहोवा का भय मानना बुराई से बैर रखना है। घमण्ड, अंहकार, और बुरी चाल से, और उलट फेर की बात से भी मैं बैर रखती हूं।'' जब हम परमेश्वर से डरते हैं, तो हम अपने आप को सभी प्रकार के पापों से अलग कर देंगे जैसे ... बुराई, गर्व, अहंकार, बुरे तरीके, और भ्रष्ट मुंह। जो लोग परमेश्वर से डरते हैं, वे सबसे पहले ऊपर दिए गए सभी दोषों से अलग होते हैं। अंधकार इस व्यक्ति को छोड़ देता है और बदले में प्रभु इस परिवर्तन के कारण उसे प्यार करता है। अब उसका जीवन ऐसे होगा, जैसा होशे में समझाया गया है, होशे

14:6 ''उसकी जड़ से पौधे फूटकर निकलेंगे; उसकी शोभा जलपाई की सी, और उसकी सुगन्ध लबानोन की सी होगी।'' उसका जीवन एक अच्छी तरह से पानी पिलाए हुए पेड़ की तरह होगा जो अच्छी धूप और मिट्टी प्राप्त कर चुका है, जिसने अपनी शाखाओं को सुंदर रूप से फैलाया है और जैतून के पेड़ और लेबनान की सुगंद की तरह है। हमारे बीच बहुत से लोग हैं जो ऊपर–ऊपर रूप से कहते हैं ''कि मैं आपको ये और वो बताने के लिए डर गया था''। यह डर नहीं है। परमेश्वर का भय का अर्थ यह है कि हमारे भीतर हम पश्चाताप करना और पूरी तरह बदलना चाहिए। हमारे सभी बुरी आदतों को हमारे भीतर से उखाड़ना चाहिए। नीतिवचन 14:27 ''यहोवा का भय मानना, जीवन का सोता है, और उसके द्वारा लोग मृत्यु के फन्दों से बच जाते हैं।'' कई मूर्तियां हैं जो शत्रु द्वारा हमारे जीवन में आती हैं। वह हमारे लिए हमेशा एक फन्दा बनाता हैं। इसलिए, अगर हम कभी भी लड़खड़ते हैं, तो हम फंसेंगे। शत्रु हम से कभी हार नहीं मानेगा, लेकिन हमारे जीवन में अलग–अलग जाल रखकर फिर से कोशिश करता रहेगा। उदाहरण के लिए, जैसे की हम चूहे के जाल में एक चारा रखते हैं, वैसे ही बुराई भी हमारे लिए मौत के अलग–अलग जाल लगाएगी, ताकि हम कुछ समय में फंस सकें। लेकिन याद रखें, जो लोग परमेश्वर का भय मानते हैं, वे हर समय सतर्क रहते हैं। यह केवल शनिवार और रविवार ही नहीं है कि हमें प्रभु से डरना चाहिए क्योंकि हम पास्टर से मिलते हैं। बल्कि, जब हम कलीसिया से दूर होते हैं, तो हमें शत्रु के द्वारा निर्धारित इन जाल के बारे में अधिक सतर्क रहना चाहिए। शत्रु हमें कभी भी लबानोन के पेड़ की तरह फलने–फूलने की इजाजत नहीं देगा, इस प्रकार जब बुरे विचार हमारे दिमाग में आते हैं, तो हमें इन विचारों को दूर करना चाहिए और उन पर परमेश्वर के भय से जीत हासिल करना चाहिए। नीतिवचन 14:26 ''यहोवा के भय मानने से दृढ़ भरोसा होता है, और उसके पुत्रों को शरणस्थान मिलता है।'' जो लोग परमेश्वर का भय मानते हैं उन्हें उनके जीवन में बहुत आत्मविश्वास मिलेगा। यदि वे कभी भी तूफान या किसी भी प्रकार की कठिनाइयों का सामना करते हैं, तो वे उन पर काबू पाएंगे क्योंकि उनके शरण का स्थान प्रभु के पंखों में होगा। यह याद रखें, जब हम बाइबल पढ़ते हैं और अंत के समय के बारे में याद दिलाते हैं, तो यह निश्चित रूप से हमारे जीवन में डर लाता है। कल्पना कीजिए कि जब हम वास्तव में अंत के समय का सामना करेंगे, तब क्या होगा। लेकिन, जो लोग यहोवा से डरते हैं, वे अंत समय के बारे में चिंता नहीं करते हैं। क्योंकि उसके बच्चे जो उस पर विश्वास करते हैं, अंत का समय इस धरती पर प्रारंभ होने से ठीक पहले ही ले लिए जाएंगे। **ऐसा कोई भी नहीं है जिन्होंने अंत के समय के बारे में पढ़ा है और अंत से डरा नहीं है।** बाइबिल अंत समय के बारे में दर्ज करता है ... मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना में, और यह बहुत खतरनाक प्रतीत होता है। यह दुःख, दर्द और आँसू का दिन होगा। परन्तु, जो लोग यहोवा से डरते हैं, वे अंत के दुखों को कभी नहीं देख पाएंगे या अनुभव नहीं करेंगे। यह आत्मविश्वास है कि हम सभी के भीतर स्वयं होना चाहिए। कोई भी ऐसा नहीं है जो बुरे विचार, जैसे गर्व, अहंकार, ईर्ष्या से बचेगा। यह किसी को नहीं छोड़ता है। हम सभी को अपनी सुंदरता, योग्यता, धन, बुद्धि और ज्ञान पर गर्व है। यह वास्तव में हमें पाप में डाल देता है। लेकिन, एक

पल के लिए जब हम हमारे प्रभु यीशु मसीह के बारे में सोचते हैं, तो वह अपने पिता का एकमात्र पुत्र था, जो उनके हृदय के करीब था। लेकिन हमारे लिए इस दुनिया में भेजा गया, जो हमें अच्छे, धार्मिक जीवन की शिक्षाओं को सिखाया। उन्होंने टूटे हुए दिल को चंगा किया, बंधकों को मुक्त कर दिया, लंगड़े को फिर से चलाया और अंधे को नजर दिया। यीशु ने दुनिया को प्यार किया और इस दुनिया में अपने पिता की इच्छा का काम किया। उन्होंने इस दुनिया में हमारे लिए दुःख उठाया और हमारे पापों के लिए क्रूस पर चढ़ाया गया, कलवारी के क्रूस पर। जब हम हमारे दिल में ईमानदारी रखते हैं कि यीशु मसीह ने हमारे लिए क्या किया था, तो हमारा जीवन उनकी महिमा के लिए चमकेगा। जैसे की वर्णन किया है होशे 14:6 ''उसकी जड़ से पौधे फूटकर निकलेंग; उसकी शोभा जलपाई की सी, और उसकी सुगन्ध लबानोन की सी होगी।'' में और मलाकी 4:2 ''परन्तु तुम्हारे लिए जो मेरे नाम का भय मानते हो, धर्म का सूर्य उदय होगा, और उसकी किरणों के द्वारा तुम चंगे हो जाओगे; और तुम निकल कर पाले हुए बछड़ों की नाईं कूदोगे और फांदोगे।'' लेकिन हम जो करते हैं, हम यीशु मसीह के सभी बलिदानों के बारे में सोचना नहीं चाहते, क्योंकि हम अपने पापी जीवन को बदलना नहीं चाहते हैं। हम दुनिया के रास्ते से प्यार करते हैं, यह चौड़ा अधिक मनोरंजक और आसान है। जबकि प्रभु का मार्ग संकरा और कठिन है। यदि हमारे परिवार और घर में हम एक पापी जीवन जीते हैं, तो हमारे पास हमारे लिए यीशु के बलिदान के बारे में सोचने का समय नहीं है। परमेश्वर के बिना हमारी जिंदगी कुछ भी नहीं है। जब परमेश्वर का भय हमारी जिंदगी या हमारे परिवारों में नहीं है, तो आने वाले दिनों में न केवल हमारे जीवन में बल्कि हमारे परिवार के सदस्यों के जीवन में भी दुख और दर्द लाएगा। अंधकार में हमारा जीवन और घर भर जाता है लेकिन जहां परमेश्वर का सम्मान है, वहां धर्म और प्रकाश का सूर्य है और वहां कोई अंधकार नहीं है। नीतिवचन 14:26,27 ''26 यहोवा के भय मानने से दृढ़ भरोसा होता है, और उसके पुत्रों को शरणस्थान मिलता है। 27 यहोवा का भय मानना, जीवन का सोता है, और उसके द्वारा लोग मृत्यु के फन्दों से बच जाते हैं।''

हम सब पवित्र शास्त्र में यूसुफ के जीवन को जानते हैं, शत्रु ने उसके जीवन में भी जाल तैयार रखा था। लेकिन हम जानते हैं कि यूसुफ पाप की दृष्टि से भाग गया, यहां तक कि उसके कपड़े भी पीछे छोड़ दिए। इस कारण से उसे जेल में रखा गया था। लेकिन हम जानते हैं कि परमेश्वर ने उसे ऊँचा और ऊँचा उठाया। यह वही परमेश्वर है जो हमें भी देख रहा है। पाप के अवसर पाने के बावजूद यूसुफ ने पाप नहीं किया। इसी तरह परमेश्वर भी हमारे अवसर को जानते हैं और हम इस तरह के पापों से कैसे दूर जाएं, और हमारे जीवन को पाप से कैसे दूर रखते हैं। हमें पता है कि यूसुफ महल में सब कुछ का अधिकारी था और उसके पास मौका था, वह पाप में पड़ सकता था। परन्तु, फिर भी यूसुफ ने अपने आप को पाप करने से दूर रखा था, क्योंकि वह परमेश्वर का भय मानता था। परमेश्वर जानता है कि उससे कौन डरता है और वह हमेशा उनकी रक्षा करेगा। भजन संहिता 103:13 ''जैसे पिता अपने बालकों पर दया करता है, वैसे ही यहोवा अपने डरवैयों पर दया करता है।'' जैसे एक पिता अपने पुत्र पर प्यार और

दया करता है, उसी तरह प्रभु परमेश्वर अपने बच्चों पर दया करता है। जब हम प्रभु से डरते हैं, तो वह हमें बहुत प्यार करता है। हम प्रभु के बच्चे हैं, वह भी हमें इसी तरह सोचता है। जो लोग परमेश्वर से डरते हैं, प्रभु सभी को उसी तरह से प्यार करते हैं। प्रभु हमेशा सांत्वना देता हैं और हमें प्यार करता है। कौन धर्मी है? भजन संहिता 92:12, 13 कहता हैं, ''12 धर्मी लोग खजूर की नाईं फूले फलेंगे, और लबानोन के देवदार की नाईं बढ़ते रहेंगे। 13 वे यहोवा के भवन में रोपे जा कर, हमारे परमेश्वर के आंगनों में फूले फलेंगे।''

रोमियो 3:24 ''परन्तु उसके अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है, सेंत मेंत धर्मी ठहराए जाते हैं।'' अकेले प्रभु की कृपा से, हमें हमारे पापों से छुटकारा मिला है। हम हमारे लिए यीशु की बलिदान के बिना कभी भी धार्मिक या पाप रहित नहीं हो सकते थे। यह केवल उसकी कृपा से है कि हम स्वस्थ पेड़ की तरह हैं, जो स्वस्थ होने के लिए अच्छी धूप, पानी और मिट्टी प्राप्त कर चुके हैं और सुंदर हैं। जैसा कि हम होशे और मलाखी में पढ़ते हैं, हम एक समृद्ध और बहुदायक मात्रा में जीवन प्राप्त कर सकते हैं यदि हम परमेश्वर के साथ जड़ पकडे रहे। यह प्रभु के प्यार से ही है कि हम धन्य हैं। जैसा कि पौलुस लिखता है रोमियो 3:28 '' इसलिए हम इस परिणाम पर पहुंचते हैं, कि मनुष्य व्यवस्था के कामों के बिना विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरता है।'' यह कानून द्वारा नहीं है कि हम धर्मी हैं, परन्तु परमेश्वर की कृपा से, यीशु मसीह के प्यार और हमारा विश्वास, जिसने हमारे जीवन को धर्मी बना दिया है। रोमियो 5:9 ''सो जब कि हम, अब उसके लहू के कारण धर्मी ठहरे, तो उसके द्वारा क्रोध से क्यों न बचेंगे?'' यीशु मसीह के लहू के द्वारा, हम अपने पापों से छुड़ाए गए हैं और धर्मी कहलाते हैं। रोमियो 5:19 ''क्योंकि जैसा एक मनुष्य के आज्ञा न मानने से बहुत लोग पापी ठहरे, वैसे ही एक मनुष्य के आज्ञा मानने से बहुत लोग धर्मी ठहरेंगे।'' एक व्यक्ति के पाप से, एक पूर्ण परिवार पाप में पड़ सकता है। इसी तरह एक की आज्ञाकारिता के साथ भी, जैसे की यीशु मसीह, कई लोग धर्मी बन गए। एक पापी के माध्यम से, कई लोग पाप में गिर गए और पापी बन गए। इसी तरह, एक की आज्ञाकारिता के द्वारा, बहुत से धार्मिक बन गए। हमें धर्मी बनने के लिए, प्रभु ने हमें कई मार्ग दिखाएं है। एक धर्मी व्यक्ति का जीवन कैसा होगा? वह खजूर के पेड़ की तरह बहुत सुंदर होगा और लबानोन में देवदार की तरह ऊंचा होगा। भजन संहिता 92: 12, 13 ''12 धर्मी लोग खजूर की नाईं फूले फलेंगे, और लबानोन के देवदार की नाईं बढ़ते रहेंगे। 13 वे यहोवा के भवन में रोपे जा कर, हमारे परमेश्वर के आंगनों में फूले फलेंगे।'' प्रभु ने हमें हमारे जीवन में उनकी अनुग्रह का अनुभव करने का अवसर दिया है। प्रभु हमारे लिए अपने एक ही पुत्र यीशु मसीह को भेजते हैं। यीशु मसीह को अपने जीवन के बलिदान के बिना पता था, उसके लहू के बिना मानव जाति के लिए कोई मुक्ति नहीं था। इस प्रकार उन्होंने क्रूस पर हमारे जीवन के लिए अपना जीवन बलिदान किया। मत्ती 3:15 ''यीशु ने उस को यह उत्तर दिया, कि अब तो ऐसा ही होने दे, क्योंकि हमें इसी रीति से सब धामिर्कता को पूरा करना उचित है, तब उस ने उस की बात मान ली।'' हमें यह भी पता है कि यूहन्ना ने यीशु को कहा कि ''मैं आपको बपतिस्मा नहीं दे सकता ?'', लेकिन यीशु ने यूहन्ना से कहा ''इस दुनिया में हमें सभी धार्मिकता को पूरा करने

की आवश्यकता है''। इस प्रकार जब भी यीशु इस धरती पर रहते थे, तो उसने अपने पिता परमेश्वर के हर वचन को पूरा किया, आज्ञाकारीतापूर्वक और इस प्रकार उसने शत्रु को कलवारी के क्रूस में हराया और इस तरह हमें अनन्त जीवन प्रदान किया, ताकि हम परिपूर्ण धार्मिकता में जी सकें। लेकिन हम जीवन में चौड़े सड़क को चुनते हैं। हमें बैठना होगा जब प्रभु कहते हैं बैठो। हमें खड़े होना होगा जब प्रभु कहते हैं खड़े रहो। हमें चलना होगा जब यहोवा कहता है कि चलो। नहीं, लेकिन हम हमेशा प्रभु से सवाल करेंगे? क्यों ? हमारे विचार उनके विचार नहीं हैं, उनका विचार इस दुनिया के विचारों से बहुत अधिक है। एक बार सीरिया में एक राजा को अभिषेक करने के लिए प्रभु ने भविष्यदकता एलिय्याह से भविष्यवाणी की, तो कल्पना करें कि यहोवा की आँखें सीरिया की तरह एक देश पर थीं। इस प्रकार, याद रखें, वह हमेशा हमें हर समय देखता है। हमारा प्रभु चाहता है कि हमारा शरीर उसका मंदिर हो। हमारे लिए उनके सभी बलिदान के बाद, हम अपने शरीर को कैसे अशुद्ध कर सकते हैं। प्रभु कहते हैं, ''अगर कोई भी इस मंदिर को नष्ट करता है, तो मैं उन्हें नष्ट कर दूंगा''। हमारे जीवन इतने आसानी से उनके द्वारा खरीदा नहीं है। उन्होंने खुद को हमारे लिए समर्पित किया है।हमारे लिए छुटकारा पाना इतना आसान नहीं था। यीशु मसीह को छह घंटे तक क्रूस पर पीड़ित किया गया था, उन्होंने चोट खाई और पिटे गए थे, उन्होंने आपके और मेरे लिए उनका खून बहाया। इस प्रकार हमारा जीवन आज खूबसूरत हैं। हम एक लापरवाह जीवन का नेतृत्व नहीं कर सकते, जिस तरह से हम इस दुनिया में जीने के लिए जीना चाहते हैं। दाऊद की इच्छा थी कि प्रभु के लिए एक मंदिर बनाए। उसके इस इच्छा को देखकर, प्रभु ने उससे कहा, ''तुम मेरे लिए कौन सा मंदिर बनाओगे? स्वर्ग मेरा सिंहासन है और पृथ्वी मेरे पैर की धुल है। क्या तुम मुझे पकड़ कर बनाए हुए मंदिर में रख सकोगे?'' नबी यशायाह ने कहा है यशायाह 57:15 ''क्योंकि जो महान और उत्तम और सदैव स्थिर रहता, और जिसका नाम पवित्र है, वह यों कहता है, मैं ऊंचे पर और पवित्र स्थान में निवास करता हूं, और उसके संग भी रहता हूं, जो खेदित और नम्र हैं, कि, नम्र लोगों के हृदय और खेदित लोगों के मन को हर्षित करूं।'' लेकिन यहाँ इस वचन में, प्रभु कहते हैं कि वह एक दुःखित और विनम्र हृदय में रहते है। हमारा महान परमेश्वर, हमारे टूटे और विनम्र दिलों के भीतर रहना चाहता है। हम कैसे मनुष्यों के रूप में, अपनी महानता पर गर्व कर सकते हैं, जो यहोवा के सामने अपवित्र टुकड़ा है। लेकिन जब हम परमेश्वर के वचन को याद करते हैं, तो यह सत्य है और वास्तविक है। अंत में, जब यीशु मसीह अपने शिष्यों को छोड़कर जा रहे थे, उन्होंने कहा, ''मैं हमेशा तुम्हारे साथ हूं''। आइए हम पढ़ते हैं मत्ती 28:20 ''और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओः और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं।'' इस प्रकार, हमें अपने दिलों को तैयार करना चाहिए जैसे हमने यशायाह में पढ़ लिया है, अगर हम चाहते हैं कि हमारे दिल में प्रभु रहें, तो हमारे पास एक दुःखित और विनम्र हृदय होना चाहिए। आइए हम पढ़ते हैं जकर्याह 2 : 10, 11 ''10 हे सिय्योन, ऊंचे स्वर से गा और आनन्द कर, क्योंकि देख, मैं आकर तेरे बीच में निवास करूंगा, यहोवा की यही वाणी है। 11 उस समय बहुत सी जातियां यहोवा से मिल जाएंगी, और मेरी प्रजा हो जाएंगी; और मैं तेरे

बीच में बास करूंगा।'' प्रभु हमारे लिए बार–बार दोहराता रहता है ''लो, मैं इस दुनिया के अंत तक तुम्हारे साथ रहूंगा''। हाँ, अगर प्रभु को हमारे साथ रहना है, तो हमें धर्मी होना चाहिए और परमेश्वर से हमेशा डरना चाहिए। एक पेड़ के लिए जो लंबा और सुंदर है, उसकी जड़ गहरी और मजबूत होना चाहिए। इसी तरह, अगर हम प्रभु के साथ एक सुंदर जीवन जीना चाहते हैं, तो हमें भी उसके साथ गहरे संबंध में बनना चाहिए। हमें उसके साथ एकता में रहना चाहिए। जितनी गहरी हमारी जड़ें प्रभु के साथ होगी उतना ही अधिक उपयोगी हम हो जाएंगे। हमें अपने जीवन में बदलाव लाने होंगे। हमारा क्या मतलब है जब हम कहते हैं कि हम प्रभु में गहरे जड़ से जुड़े हुए हैं? हमें अपने आप को बदलने की जरूरत है, हमें अपने पापों को दूर करने की आवश्यकता है, हमें अंधेरे को दूर करना होगा। हमें अपने जीवन से कमजोरी को निकलने की जरूरत है, हमें स्वयं भी नम्र होना चाहिए। परमेश्वर के साथ एकता में रहने के लिए हमें बहुत सी बातें करने की जरूरत है। हमारे जीवन में हर फल प्रभु से एक जीत है।

नीतिवचन 11:28 ''जो अपने धन पर भरोसा रखता है वह गिर जाता है, परन्तु धर्मी लोग नए पत्ते की नाईं लहलहाते हैं।'' हम अपने पैसे, सौंदर्य योग्यता, संपत्ति और संपत्ति की महिमा में आनंद में नहीं रह सकते हैं, हम सूखे हुए पत्ते की तरह गिरेंगे। सूखे पत्ते कहाँ गिर जाते हैं? गड्ढे में, जो जलाया जाएगा। इस प्रकार, हमारा जीवन एक बीज की तरह होना चाहिए जो कि मिट्टी में बोया जाता है, जो कि बढ़ेगा और भविष्य में फल लाएगा। जब एक बीज बोया जाता है, सूखे मृत बीज नए जीवन में कोमल पत्तियों के साथ खिलता है और एक फलदार वृक्ष में बदल जाता है, इत्यादि। इसी तरह, हमारे जीवन में फल होना चाहिए, जैसे कि जब हम मर जाते हैं, तो हमें फिर से प्रभु के स्वर्गीय राज्य में खिलना चाहिए। प्रभु ने अपने बलिदान के माध्यम से हमें धर्मी बना दिया है। चलिए पढ़ते हैं 1 पतरस 2:2 ''नए जन्मे हुए बच्चों की नाईं निर्मल आत्मिक दूध की लालसा करो, ताकि उसके द्वारा उद्धार पाने के लिए बढ़ते जाओ।''

यीशु ने कहा है मत्ती 4:4 ''उस ने उत्तर दिया; कि लिखा है कि मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है जीवित रहेगा।'' प्रभु का हर वचन, हमें जीवन दे सकता हैं। प्रभु का वचन जीवित है और यह जीवन देता है। अगर हम दाऊद की जिंदगी देखते हैं, तो वह एक चरवाहा लड़का था। लेकिन प्रभु ने उसे बहुत आशीर्वाद दिया और उसे इस्राएल पर राजा बनाया। दाऊद के जीवन में इस आशीष का क्या कारण था? दाऊद परमेश्वर से डरता था और अपना जीवन प्रभु से भय मानकर जीता था। भजन संहिता 1: 1–3 ''1 क्या ही धन्य है वह पुरूष जो दुष्टों की युक्ति पर नहीं चलता, और न पापियों के मार्ग में खड़ा होता; और न ठट्ठा करने वालों की मण्डली में बैठता है ! 2 परन्तु वह तो यहोवा की व्यवस्था से प्रसन्न रहता; और उसकी व्यवस्था पर रात दिन ध्यान करता रहता है। 3 वह उस वृक्ष के समान है, जो बहती नालियों के किनारे लगाया गया है। और अपनी ऋतु में फलता है, और जिसके पत्ते कभी मुरझाते नहीं। इसलिए जो कुछ वह पुरूष करे वह सफल होता है।'' जैसा हमने होशे 14: 6 में देखा, मलाकी 4:2, परमेश्वर का डर हमेशा हमारे दिलों में होना चाहिए जैसे दाऊद ने प्रभु का भय मन था और धन्य था। सभी अच्छी चीजों को एक धर्मी व्यक्ति

आनंद ले सकता है, इसलिए प्रभु ने अपने एकमात्र पुत्र यीशु को इस दुनिया में भेजा, ताकि हम धार्मिक बनें और हमारे जीवन में प्रभु के आशीर्वाद का आनंद लें।

इस प्रकार, दिन और रात हमारा ध्यान प्रभु के लिए होना चाहिए, हमारा जीवन स्वस्थ वृक्ष की तरह खिल जाएगा, जैसा कि हम पढ़ते हैं होशे 14:6 ''उसकी जड़ से पौधे फूटकर निकलेंगे; उसकी शोभा जलपाई की सी, और उसकी सुगन्ध लबानोन की सी होगी।''

प्रभु करे यह संदेश हर व्यक्ति के जीवन में आशीष लाए !

प्रभु की सेवा में आपकी,

पास्टर सरोजा।